REET MAINS | अध्यापक भर्ती

सभी प्रकार के

बालुका स्तूप

और

अर्द्ध शुष्क मरुस्थल

Concept + याद करने की गारंटी

Class 9

बालुका स्तूप युक्त प्रदेश - 58.50%

बालुका स्तूप

→ रेत के टीले
→ पवन द्वारा रेत के निक्षेपण (जमाव) द्वारा निर्मित रेत के टीले।

धोरे

↳ लहरदार रेत के टीले

धरियन

↳ गतिशील रेत के टीले। mobility
↳ स्थानीय लोग रेत के टीलो को धरियन कहते है।

अनुदैर्ध्य/रेखीय बालुका स्तूप

- हवा की दिशा के समानांतर बनने वाले बालुका स्तूप
- ऊँचाई 10 से 60 मीटर तक
- सर्वाधिक विस्तार - जैसलमेर,बीकानेर,अनूपगढ,सूरतगढ़ आदि में

अनुप्रस्थ बालुका स्तूप

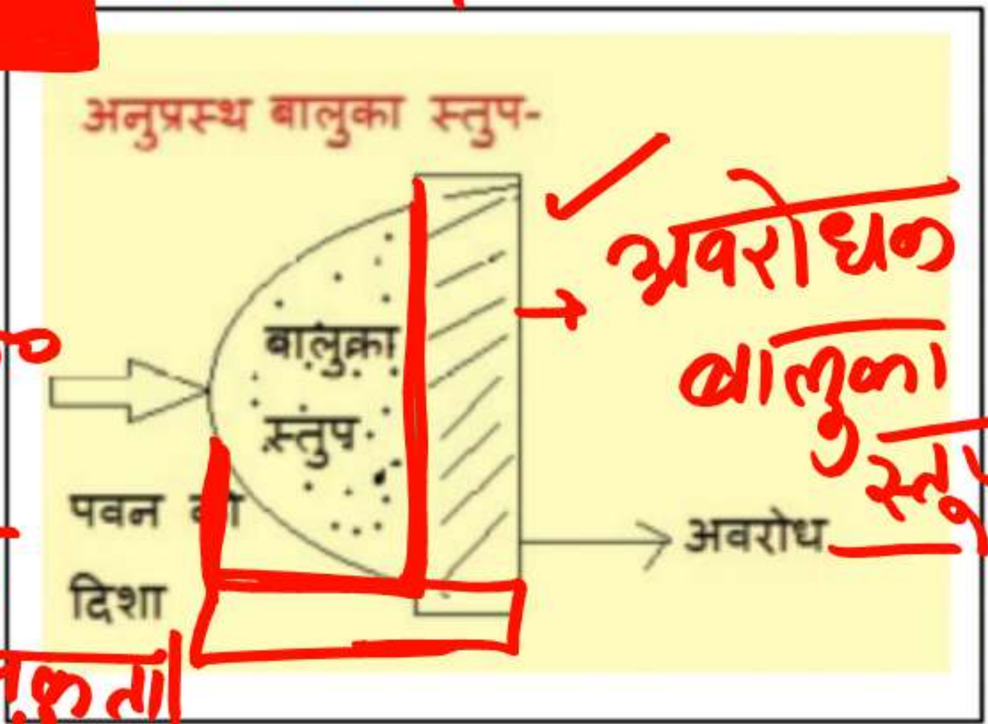

- वायु की दिशा के समकोण पर बनने वाले बालुका स्तूप
- ऊँचाई - 10 से 40 मीटर तक
- सर्वाधिक - जोधपुर ग्रामीण,बाड़मेर,बालोतरा व बीकानेर में।

बरखान/बरछान → निर्माण वायु भंवर / सिंगनुमा

- अर्द्धचंद्राकार बालुका स्तूप | कटोरेनुमा } सबसे ज्यादा mobility
- सर्वाधिक गतिशील,नवीन बालू युक्त व सर्वाधिक नुक़सानदेयी
- ऊँचाई - 10 से 20 मीटर , चौड़ाई - 100 से 200 मीटर
- सर्वाधिक - शेखावाटी में } चुरू का झालेरी क्षेत्र और सीकर का मंथा नदी क्षेत्र इसके लिये जाना जाता है)

पेराबोलिक बालुका स्तूप P → Pin → सिर के पिन की आकार

- महिलाओं के बालों की पिन के आकार के बालुका स्तूप
- मरुस्थली वनस्पति की सहयोग से निर्मित बीकानेर में सर्वाधिक

↳ बहुमुखी बालुका स्तूप

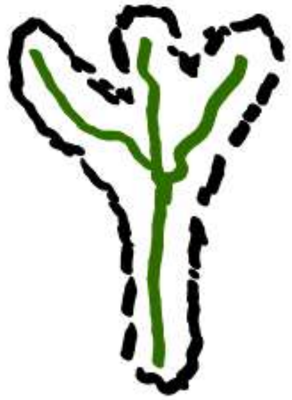

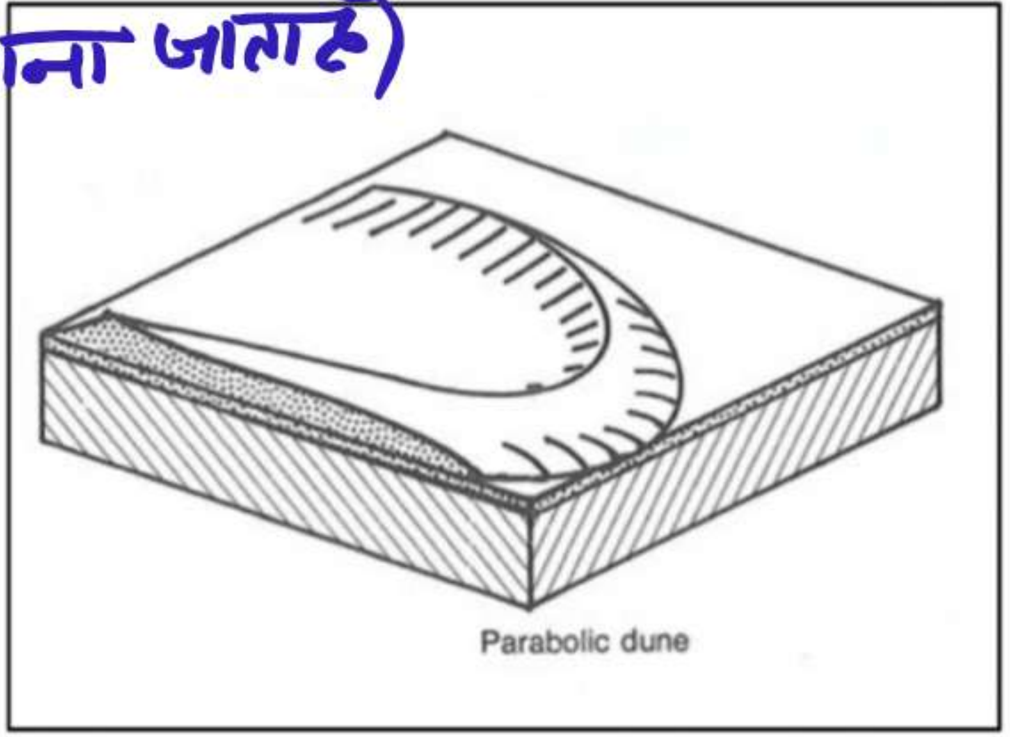

सीफ़ → अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप का भाग

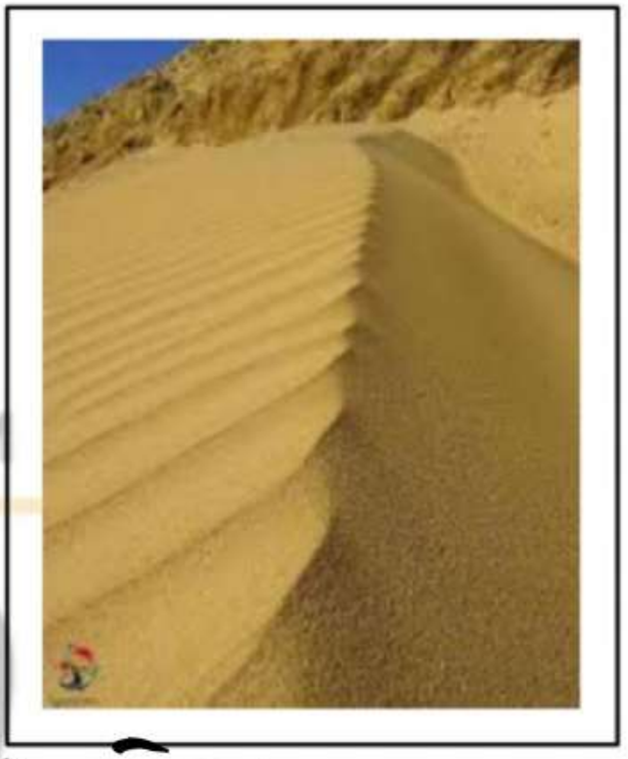

- विपरीत दिशा की शक्तिशाली पवन के कारण बालुका स्तूप की श्रृंखला का बीच बीच से कट जाना ।

सब्र कापिस स्तूप → नेवखां | लुनेट | ऊँचाई → 5 मीटर | सर्वाधिक → बीकानेर

- छोटी झाड़ियों व मंद पवन गति से निर्मित बालुका स्तूप → अस्थिर | असंगठित

तारा बालुका स्तूप STAR → पंचमुखी | बहुमुखी

- तारे(STAR) के आकार के बालुका स्तूप
- सर्वाधिक - मोहनगढ़,पोकरण व सूरतगढ़

- **बालसन** → मरुस्थल के पहाड़ी भाग की निम्न भूमि पर जल एकत्रित हो जाता है और इस से बनी झील बालसन कहलाती है।
- **सेलीनास** → मुलायम लवण की परतयुक्त झील। अत्यधिक खारी झील
- **तल्ली** → मरुस्थल में मीठे पानी के छोटे छोटे गड्ढे। खड्डे।
- **मरहो** → तल्ली के सूखने के बाद बची हुई मिट्टी।
- **नाड़ी** → दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये गांव से बाहर बना हुआ छोटा तालाब।
- **नाड़ी का टोबा** → नाड़ी का सबसे गहरा भाग।

- **प्लाया** → मरुस्थल में पाई जाने वाली अस्थाई खारे पानी की झीलें। दो बालुका स्तूपों के मध्य पानी जमा होने से निर्माण। पालीवाल ब्राह्मणों के कारण नाम

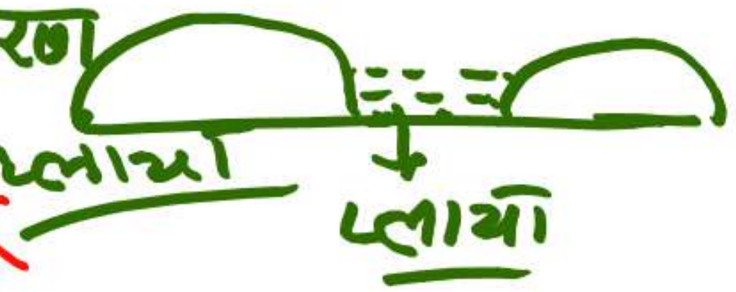

- **बज़ादा** → प्लाया के निकट पर्वतीय क्षेत्र की निम्न भूमि। कंकड़-पत्थर में एकत्रित पानी।
- **रन/टाट** → प्लाया झीलों का दलदली क्षेत्र में बदल जाना।
  ↳ इसे टाट भी कहते हैं। इसकी प्रकृति भी खारी होती है।
- **खड़ीन** → तल्ली/पोखर के सूखने के बाद पीछे की स्थिति।
  ↳ परम्परागत तकनीक। सर्वाधिक - जैसलमेर
- **पीवना** → मरुस्थल में पाया जाने वाला विषैला सर्प।
- **आगोर** → मरुस्थल के घरों में ढलान देकर वर्षा जल को संग्रहित करना।

प्रमुख रण या टाट

- जैसलमेर → पोकरण, लवां, बरमसर, भाकरी
- फलौदी → बाप
- बालोतरा → थोब
- बाड़मेर → रेड़ाना
- चूरु → तालछापर

- **मरुस्थल का मार्च** → मरुस्थल का धीरे धीरे बढ़ना।
  - → रेंगती मृत्यु
  - → विस्तार → हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, गुजरात
    - → सर्वाधिक हरियाणा।
  - → अरावली के अजमेर-मेरवाड़ा Gap से अधिक विस्तार
  - → दिशा → दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर
  - → सर्वाधिक प्रभावित गाँव → नाचना (जैसलमेर)

{ इसके विस्तार में बरखान बालुका स्तूपों का सर्वाधिक योगदान है }

• अर्द्धशुष्क मरुस्थल

- 25 से 50 सेमी औसत वर्षा वाला क्षेत्र

इसे 4 भागो में बाँटा गया गया है

1. घग्घर का मैदान
2. शेखावाटी अंतः प्रवाह क्षेत्र
3. नागौरी उच्च भूमि
4. लूनी बेसिन/गोडवाड़ प्रदेश

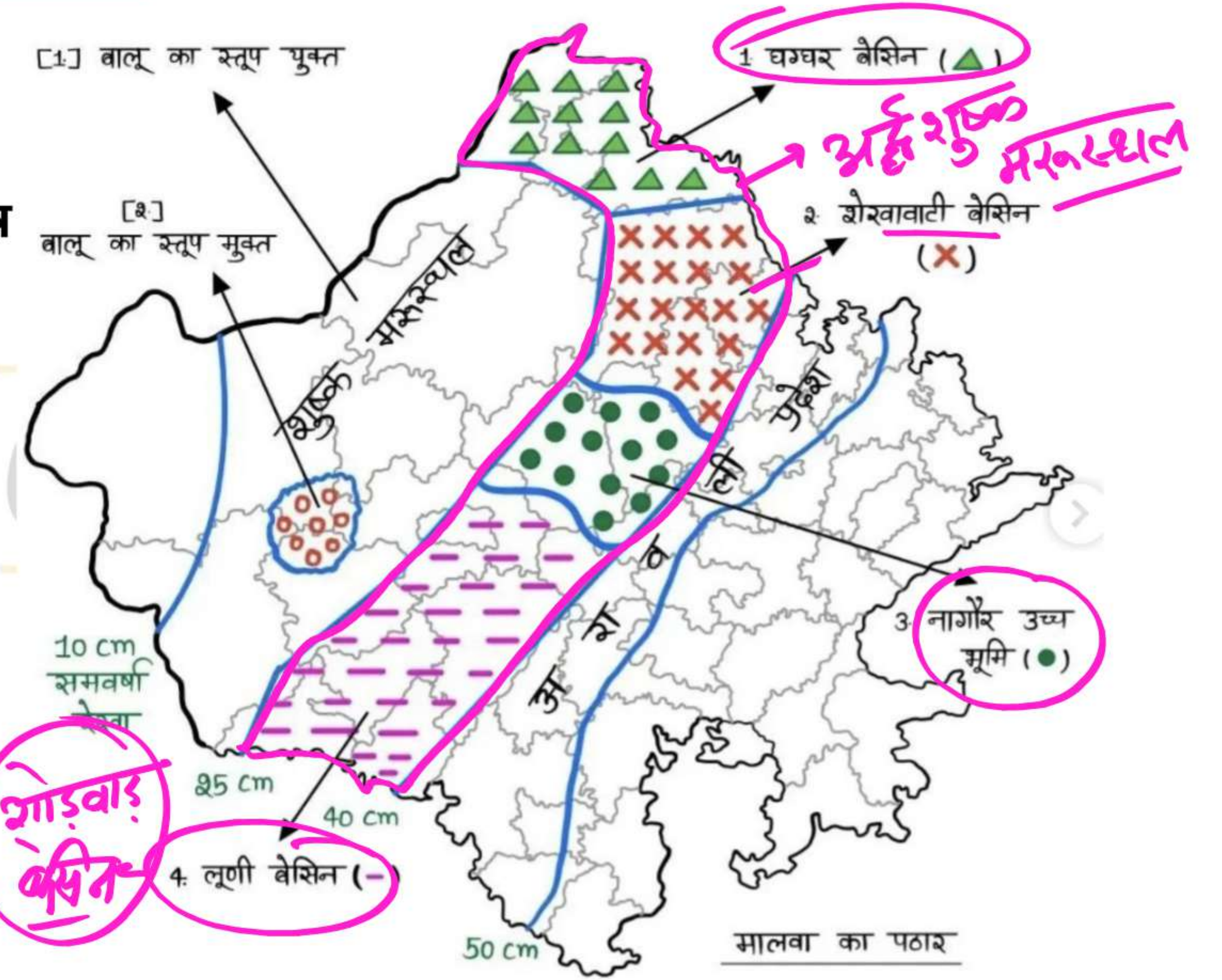

(A) घग्घर का मैदान

- यह श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में फैला हुआ।
- यह घग्घर नदी का अपवाह क्षेत्र हैं।
- 'काठी/बग्गी'- इस बेसिन में पायी जाने वाली चिकनी एवं उपजाऊ मिट्टी, जिसका विस्तार गंगानगर एवं हनुमानगढ़ में हैं।

(B) शेखावाटी अंतर्वर्ती क्षेत्र (बांगर)

- इसका विस्तार **सीकर, चुरु, झुंझुनूं** जिलों में है। → तोरावाटी बेसिन
- यह **कांतली नदी** का आंतरिक अपवाह क्षेत्र है।
- यहाँ की मृदा **चूनेदार** अधः स्तर से आवृत है।
- यहाँ कुओं को स्थानीय भाषा में **जोहड़** कहते हैं। → जोहड़ का गहरा भाग चोभी कहलाता है
- **बालुका स्तूप** - **अनुप्रस्थ** व **बरखान** प्रकृति के देखने को मिलते हैं।

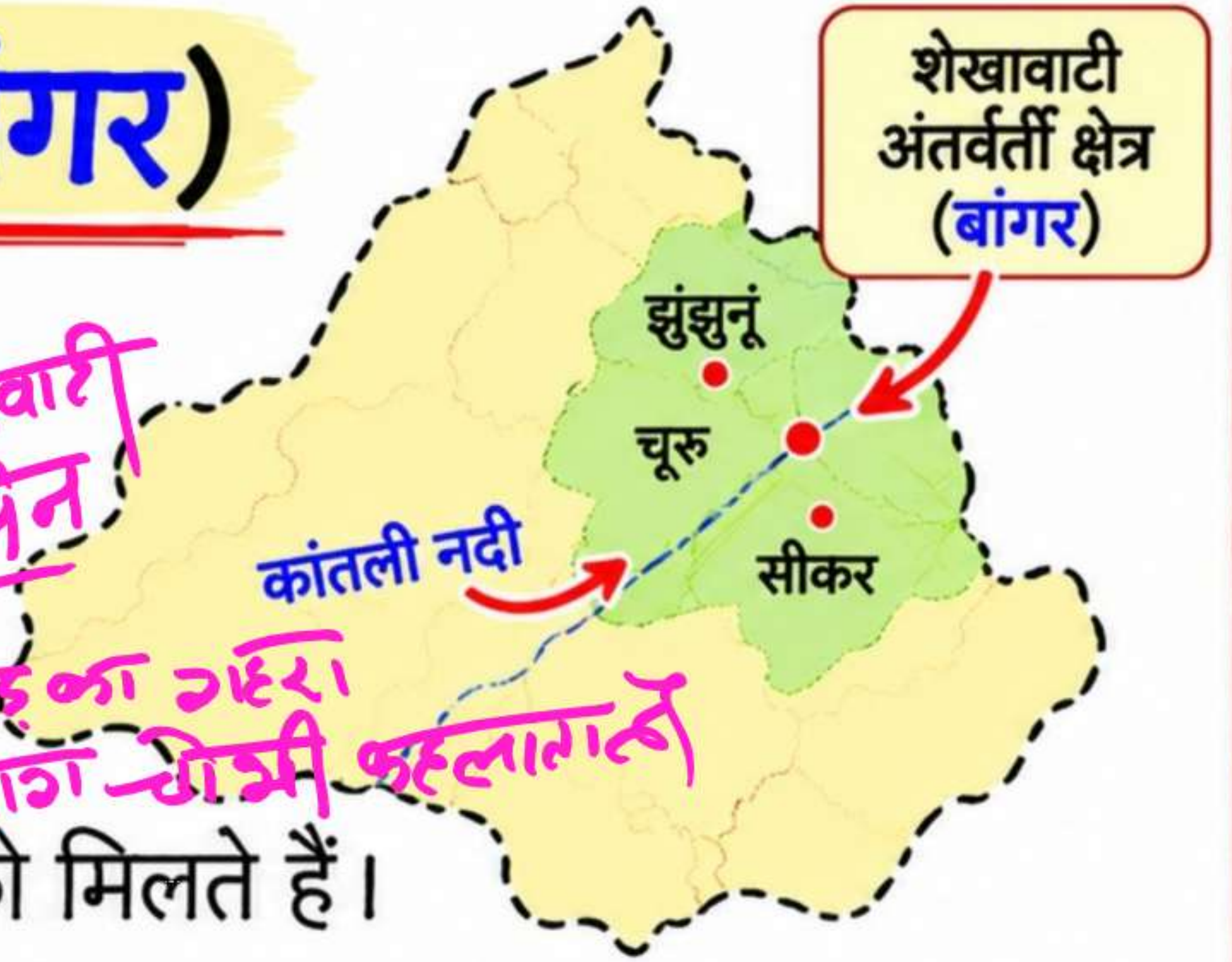

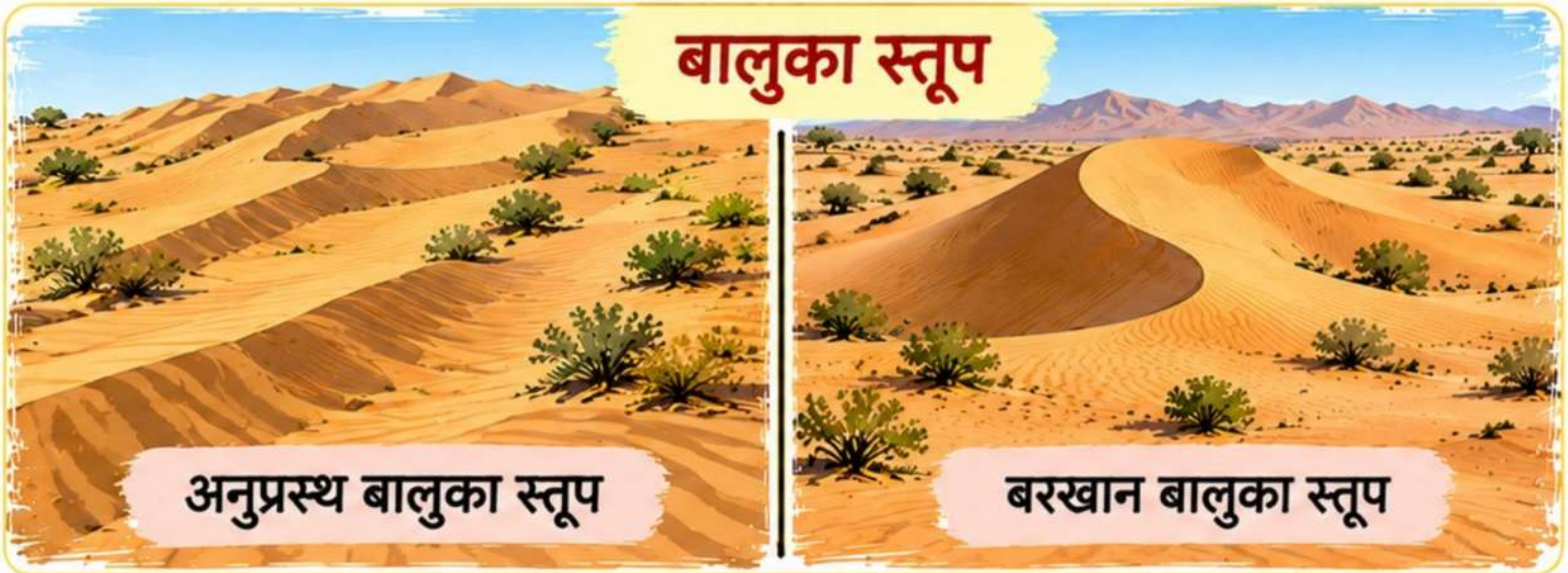

(C) नागौर उच्च भूमि प्रदेश

- इसका विस्तार **नागौर** जिले के **लूणी बेसिन** व **शेखावाटी प्रदेश** के मध्य देखने को मिलता है।
- यहाँ की **मृदा लवणीय** है तथा **सोडियम क्लोराइड (Nacl)** के कणों की उपस्थिति के कारण यहाँ **खारे पानी की झीलें** अधिक हैं- जैसे- **डीडवाना, डेगाना, कुचामन** व **नावाँ** आदि। Hunch Back Belt
- **कूबड़ पट्टी / बांका पट्टी** - नागौर व अजमेर के मध्य स्थित अधिक **फ्लोराइड** वाले क्षेत्र को कूबड़ पट्टी/बांका पट्टी कहा जाता है, जिसके कारण **फ्लोरोसिस** बीमारी होती है। सर्वाधिक प्रभावित गांव → आसरवा

डीडवाना झील

डेगाना झील

कुचामन झील

कूबड़ पट्टी / बांका पट्टी

(D) लूणी बेसिन या गोडवाड प्रदेश

- इसका विस्तार **पाली, जालौर** व **सिरोही** जिलों तक है।
- यह **लूणी नदी** का अपवाह क्षेत्र हैं।
- इसमें **ग्रेनाइट पहाड़ियाँ, जालौर पहाड़ियाँ** व **सिवाणा हिल्स** स्थित हैं।
- **काला भूरा डुंगर** - इस बेसिन के पूर्व में **पाली** में स्थित पहाड़ियाँ।
- इस भू-क्षेत्र की **वनस्पति** - **बबूल, फोग, खेजड़ा, कैर, बेर** व **सेवण घास** आदि हैं, क्योंकि ये मरुस्थलीय वनस्पतियाँ हैं।
- **प्रमुख फसलें मोठ, बाजरा तथा ग्वार** सभी खरीफ फसलें हैं। **बाजरा मोठ, ग्वार** आदि का सर्वाधिक उत्पादन भी इन्हीं क्षेत्र में होता हैं।

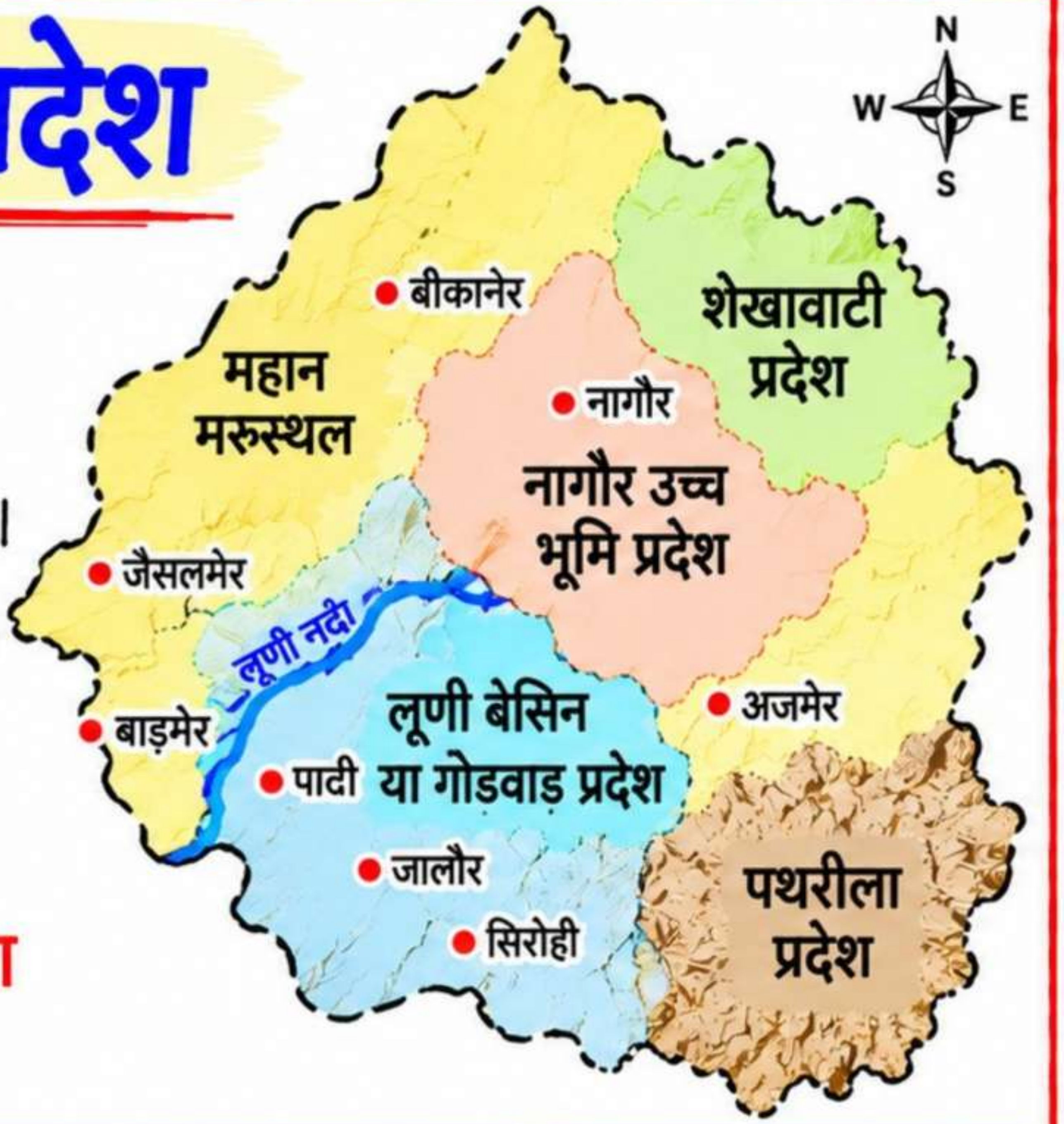

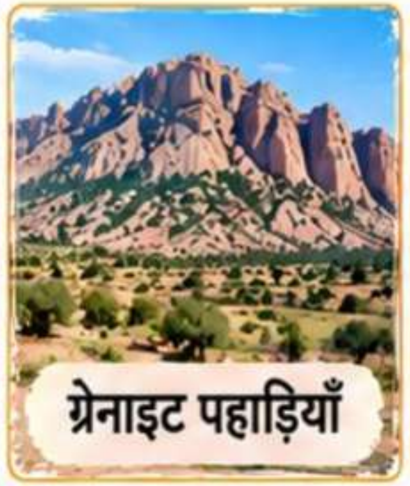
ग्रेनाइट पहाड़ियाँ

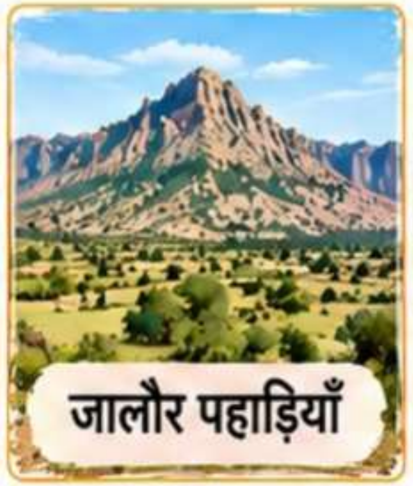
जालौर पहाड़ियाँ

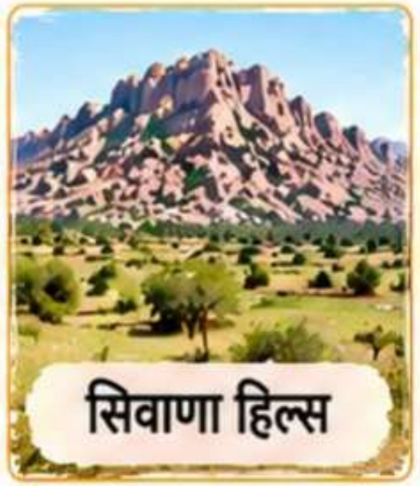
सिवाणा हिल्स

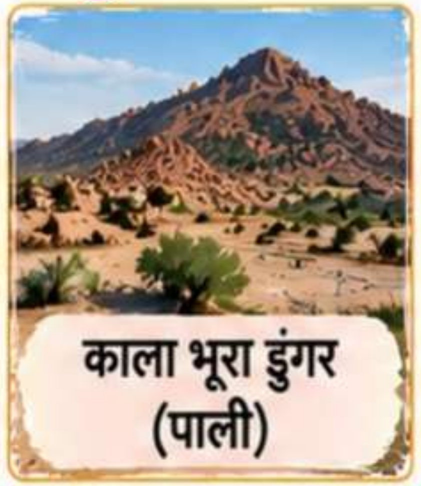
काला भूरा डुंगर (पाली)

"Join Our Official TELEGRAM CHANNEL"

TO Get NEW UPDATES !

- New Job Alerts
- Academic News
- Class PDFs
- Practice MCQ Questions & Many More

@https://t.me/gouravgyandhara

Join Now!

गौरव सिंह घाणेराव Founder of GGD
Gouravgyandharaofficial
gouravgyandhara
Gourav Gyan Dhara
gouravgyandhara
gouravgyandhara
JOIN THE
FASTEST
GROWING
EDUCATION
PLATFORM
GGD
Gourav Gyan Dhara
निःशुल्क व नियमित शिक्षा देने में
राजस्थान का न. 1 YOUTUBE CHANNEL